

107	107
107	107

SEAHAMPTON

१ॐ नमः श्रीगुरुवत्सलये ॥ ॥ ॐ गुरुवत्सलये ॥
श्रीगुरुसंघैतथैव वत्सलये वत्सली श्रीगुरु
वत्सलये ॥ ॐ गुरुवत्सलये ॥ गुरुआशं वत्सलीये
स्वाहा जथादिर्जातमन्त्रिनसनापिता सर्वतथागत ॥
तथाहं सनापयिष्यामि सुखेन दिदिद्यनवारिना ॐ
आहं सर्वतथागत ॐ नमः कसमयेहं ॐ ह्रीं स्वाहा
१ कायविश्वधनेहं ॐ सर्वविघ्नान्नाहयेहं
ॐ नमो भगवते पूज्ये कसम जायतथागताया अहंते
सम्यकसुखाय तथथा ॐ पूज्ये २ महापूज्ये शुभ
पूज्ये भवेपुण्यासमवेपूज्याकीकरने स्वाहा

स्वाक्याकथकपाहुगलपिधकावआसनयाय ॥ ॐ
आहं २ ति कवत्सलयेहं जवत्सलसखवत्सलये
ने ॐ सर्वपापानपनयेहं २ रत्सलये मनिधनिव
जनिमहप्रतिसरेरक्ष २ मीसर्वसत्तानाचहं रुट्स्वाहा
मदत्सलयेहं कवत्सलयेहं ॐ वत्सलयेहं
वत्सलयेहं ॥ वत्सलीयेहं स्वाहा ॥ वत्सलीयेहं
सुवर्णजलधारिस्वाहा जायतससुनायसमत्सल
येहं दानेगोमयंमंभुनावसहितंशीलं वत्सलीये
नेहं ॐ तिहुट्टेपिपिलिकानयपुष्पविघ्नं कृपास्थापता

ध्यानं तदा रां मे काचिल्ल करनं प्रसासु लेखो ज लाय तायां
रमिता वदे वलः लभते कृ तासु निम दलं भवतु कन
कवर्णाः सर्वलोकै विनि मुक्त सुरमनज विभृष्ट चंद्रव
दिविति कांतिः धनकनकसिद्धि जायते राजवंशि
सुगतवर गृहे स्मी कायकमानं कृ ता औ मंद लेखे सुते
ये सर्वे तथा गत अधिस्थाना अधिस्थी तं तु स्वा हा ॥

लाहति सत्वा चिकिध न तपा वमं न्यल सतो ते मय
लसत्वा उय का वलि सतय औ चन्द्रार्क विमले स्वा
हा ॥ औ वज्रसत् सर्वविघ्नान् सारयहे ॥ मन्दलसत्
नवोये ॥ औ हमा मधमे रमे नम दधुस औ ह्रीः

मध्वे
मधमे रमे नम ॥ दधुस ॥ औ सुंः सूकमे रमे नम ॥ दधुस
औ यं पुर्व विदि हाय नम ॥ पुर्व ॥ औ रं जं बोधि पाय नम ॥ द
धिन ॥ औ लंः अपरगो दा वरि हाय नम ॥ पादम ॥ औ वं उत
रकुरु वे नम ॥ औ या उपदि पाय नम ॥ भग्ना ॥ औ वा उपदि
पाय नम ॥ नैरित्य ॥ औ ला उपदि पाय नम ॥ वायु ॥ औ वा
उपरि पाय नम ॥ इत्या ॥ औ यं गजरत्नाय नम ॥ दु ॥ औ
रः असेरत्नाय नम ॥ द ॥ औ लः पुरुषरत्नाय नम ॥ प ॥
औ वस्तिरत्नाय नम ॥ उ ॥ औ या स्वक्त्ररत्नाय नम ॥ अ ॥
औ राः मनिरत्नाय नम ॥ ने ॥ औ ला वक्त्ररत्नाय नम ॥
वा ॥ औ आ सर्व निधाने नम ॥ इ ॥ औ वं चद्राय न

म॥ **प** ॥ ॐ सुंः सूर्यी यनम॥ **प** ॥ ॐ आः इं श्री वज्र
गुरुभ्यं नम॥ **दशुसं** ॥ मंदलपुजा गाय॥ ॐ वज्रपुष्पे
स्वाहा॥ ॐ वज्रधुपे स्वाहा॥ ॐ वज्रदिये स्वाहा॥ ॐ व
ज्रगन्धे स्वाहा॥ ॐ वज्रनेत्रे स्वाहा॥ ॐ वज्रलाज्याय
स्वाहा॥ **जाकि मंदलमधुना व मंदलमहायके**॥ च
तुरत्तं मयं मेरुमलदियः पत्तो भित्तं नानारत्नं समा
किर्णः तदेतुतरदायनिगुरुभ्यो बुधः धर्मैभ्यश्चः सं
धैभ्यश्च तथैव वनिर्या तया मीभावेन संयुर्गोरत्नम
दत्तं॥ **जाकि हाजलपाओ चोने**॥ ॐ आः इं श्री मत्तवः
जसतगुरुवरचरनकमलाय संम्यक्ताना भवामनक

रायेन मोहं नमस्ते नूनमो नम भगव्या इत्थानम
स्थामि श्रीगुरुनाथं प्रसिधमे॥ ॥ यस्य प्रसादकि
रनेः फलिततात्मतत्वरत्नप्रभाप्रतिकरप्रहतांधका
रापरं नूनविरोधश्रीसविरासमुचैतस्मीनमकृतलं
यं गुरुभास्कराय॥ ॐ नमो बुधाय गुरुभ्य नमो धर्मा
य तत्तनि नमो संघाय महत्तमे तिभ्योपि सततं तं रा
मो सर्वबुधनमं स्था मीधर्मं च जिनभारितं संघं च
सितसुव्रत्तत्रय नमो सुते रत्नत्रयमेसरने सर्वं
प्रतिदित्तमेध अणुमो देजगत्पुत्र बुधबोधो ददे
मम आवोधो सरनेनामि बुधः धर्मं जनस्तमः बोधि

चित्तकरो मे रव सो पार्थ प्रसिधमेः उत्पादयामि पर
 मंवर बोधिचित्तं निमंत्रयामि अहं सर्वसत्तां इत्यंत रि
 ष्य वत्त बोधिचारिका वृद्धो भवेयं जगतो हिताय ॥ ॥
 देशनां सर्वपापानां युजनां च। मोदिनां कृतप्रभासं
 चरिष्यामि आर्याणां गणेषु बलं मया बालेन मुर्धेन जत
 किं चित्पापमागमप्रकृत्या वश्यसा वश्यः प्रकृता वदे
 मेव च। तदतेयं देशया मेघनाथानामगुतस्थीतं कृ
 तां जलिदुर्वाभिमप्रनियत्ययुनयुनः अत्ययं मत्पयं
 तेन प्रतिगच्छतु नायकः नमदकमिदं नाथं शाकतः।
 ययुन मेयाः जथाते तथा गतायां आर्या अहं ते सम्पद

संवृधत्तानेन वृद्धः वशुवायानेति पस्पति तत्कृतसत्तु
 लजजातिकं जंनिका यजस्व भावं जनरत्नं जयाधर्म
 तथा संविद्यते तथा इयं परिनामयामि नित्यं परिनाम
 यामि तथा समानेन समाधिका लं लोकस्य हर्तुं वकर
 तुं च सदा तु सत्तितमप्रकासं जयै भवानुदससत्तनुमु
 स्रति मागतो भा एथ कथाजोगमुपागतो भाः सर्वप्रका
 रे जगतो हिताय ॥ वहिस तं वतय ॥ ॥ ॐ ह्रीं आवम
 ने प्रोक्षने प्रतिदुस्वाहा ॥ ततो यं कालेन वायुमंदलं त
 दुपरिरंजाता भग्नी मंदलं तत्र सुकृशितपत्रभाजने
 तत्र भक्तारिपरिहृतिं ॐ भूँ औं जिँ रँ वँ हँ लँ मँ पाँ ताँ
 वै कालजातपचासतपचरूपः पस्पत ॥ जहँ वै हो ॥ व

कुरु जगत्पति जगत्पति

तिस्वा वीय ॥ ॐ इडा य स्वाहा ॥ ॐ जमा य स्वाहा ॥ ॐ व
 हना य स्वाहा ॥ ॐ कूय ला य स्वाहा ॥ ॐ अग्नी य स्वाहा ॥
 ॐ नै रित्य स्वाहा ॥ ॐ वायु य स्वाहा ॥ ॐ इशाना य स्वाहा
 ॐ उर्ध्वं स नित्य स्वाहा ॥ ॐ अर्द्ध पृथिवे स्वाहा ॥ ॐ चंद्रान
 क्षत्राधिपतय स्वाहा ॥ ॐ सूर्या ग्रहाधिपते स्वाहा ॥
 ॐ गंगागे भ्य स्वाहा ॥ ॐ अतुरे भ्य स्वाहा ॥ ॐ सर्वजशः
 भ्य स्वाहा ॥ ॐ दशदिगलोकपाले स्वाहा ॥ ॥ वसिष्ठ
 पत्रोपहारयुजा ॥ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ वज्रपुष्प स्वाहा ॥ व
 गंधे स्वाहा ॥ वज्रनैवय स्वाहा ॥ वज्रदिये स्वाहा ॥ वः
 जलाभ्या य स्वाहा ॥ ॐ वज्रतासे इं ॥ ॐ वज्रमाते त्रों ॥ ॐ

पृथ्वीदिगा

वज्रगीते हों ॥ वज्रनित्यम् ॥ वज्रपुष्पे इं ॥ वज्रपुष्पे त्रों ॥
 वज्रं वलो किते हों ॥ घंठ वजे अ ॥ वज्रवज्रां दर्शने इं ॥ रस
 वजे त्रों ॥ परतु वजे हों ॥ धर्म धातुगर्भे अ ॥ सित ॥ ॐ
 ॐ इं स्वाहा वज्र ॥ ॐ हो स्वाहा घंठ ॥ वज्रसत्त्वसंज्ञा त भव
 वज्रसत्त्वमजुतरवज्रधर्मं शाहिनि वज्रकर्म कुलो भवं
 ओ आहं त कि जहं त कि ज हो ॥ ॐ इडा दयो महाराजा
 लोकपाला महर्षिका कीलयंति दशकोर्ध्वं वि द्युहं तान
 मस्तुते ॥ तर्पन ॥ विश्राणां बुध विं वंदितव स करधरा
 रास्यपाविंदुते स मैत्रियं चारुपं शिवशिववयुषं
 मजुद्योमं चगरालं पद्मोत्तंदं दं रुपं कुतिलं लवयु वज्र

निभिमनादं विज्ञानं ज्ञानरूपं न भवति परिभवपंचमु
निप्रनम्य ॥ **स्वां जा किलं य सधु ना व सं द ल स हा य के**
ॐ इदादि वदिसह देव सधैरि सं च ग दं तु वति विसेय
अग्नै जग नैरित्यभुयति श्र आ पा पी त पा वा यु ध ना धि
पीति श्र ई शान भु ता धि पीति श्र दे वा उ र्ध चं द्रा क पी तां
मह श्र दे वा स सं ता भु व वे च ना गा ध रा **१ गु हे ग रौ स सं**
जा पीति २ लोक नि वे द यं तु त्व क श्र का श्रै व दि शा स भु
ता ग दं तु तु त्वा स वि रा स सै न्याः सह पु त्र दारा सह भ त्वा
सं घा यु ष्यं वति धु पं वति विले प नं च भु जं तु पी वं तु जि
घं तु इ दं च क र्म स फ लं तु गं तु त्वा हा ॥ **॥ ह न हा च के**

ॐ नमो रत्न त्रयाय च द्रु पानय महा वज्र को धाय इक्ष
कत मे र वा य अ सि मु स ल पर सु पा स गृ हित ह र ना य
ॐ अ मृत कु द ति र व र वा दि २ ति व २ व च २ ग र्ज २
वि स्फो त य २ महा ग न प ति जि वि तां श्व का रा य व पु
वा य ॐ आ इं फ ट् स्वा हा ॥ **॥ व ति रा पं च भा र यु जा ॥**
त र्प न ॥ स ता स्त ॥ ॐ व ज्र स त्व स म य म नु णा ल य व ज्र
स त्व ते न प्र ति हृ द्यो मे भवः सा सु त ष्यो मे भव सु त ष्यो
मे भव अ नु र क्तो मे भव सर्व सि धि मे प्री यं द्य सर्व क र्म सो
चि त्मे चि त् श्रा यं कुरु इं ह ह हः हो भ ग व न् सर्व तथा
ग त व ज्र मा ने न मुं च व जी भव महा स म य स त्ता ॥

मंदलधोरु ॥ कृतो व सर्व सत्कार्यं सिधिनत्वा जथानु
गा गच्छोन्मिधि विषये पुनलायगमनाय ॐ आइं
वज्रमं तुलमुः ॥ ॥ पंचगव्यं ध्याय धुने वसदत्ता
तं विषय धुने वा ॥ मंदलसलव कोया सिद्ध मुनय ॥
त्वा वीर्य ॥ ॐ वै लोचनाय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ अम
र्यो भ्याय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ रत्नसंभवाय
वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ अमिताभाय वज्रपुष्पं प्र
तिदत्त्वा हा ॥ ॐ अमोघसिधिय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा
हा ॥ ॐ मामा कियत्त्वा हा ॥ लोचनिय वज्रपुष्पं प्रति
दत्त्वा हा ॥ अपमनिय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ ता

राय वज्रपुष्पं प्रतिदत्त्वा हा ॥ ॐ वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ ॐ
वज्रपुष्पे स्वाहा ॥ ॐ ॥ ॐ वज्रगन्धे स्वाहा ॥ ॥ सिद्ध ॥ अ
वज्रनैवय स्वाहा ॥ नैवय ॥ ॐ वज्रदिये स्वाहा ॥ मज
वज्रराज्याय स्वाहा ॥ ताय ॥ मंदलसलव कोया स्थानया
॥ ॐ सुप्रथित वज्रे स्वाहा ॥ ध्यान लिखे अनिसं सक
लभिनं सिद्धं तय वा के ॥ ॐ कुंलास्याय स्वाहा ॥ ॐ उच्चाता
दर वक्रतो निधुदुता विदुदुता भास्वरा दग्धादित्रयात्र
यो कधारात्रयो क महीतापि युषधारा पुरता दधज्ञानर
ता विकारिकरुता स्वां संधाररितीर्ध का फुरज भुवारा हि
कां प्रात भुचेत श्री ॥ निर्माणादिदिने समंदलगता का
यादिवर्णा वृता प्रजाता जलनुवृं जलमृत सुभा सुक्ष

भातोपमाविद्यावृधकथंवहत्तत्रयोचक्रत्रयोभे
दनित्वाभदालरितोरधकाफुरतभुवागहिकोप्रातभु
चेतश्री॥धुनेवथमनतीयेसकस्याततिके॥ धनं
तिअंतिपायिराकोरं सगंधउः मतयातभावनातः
स्वीतयेकके॥ भगवानश्री ३ रविससिसामकिदेवता
आराधनापुं जाशिमित्यार्थ॥ स्वभावसुधासर्वधर्मा
नास्वभावसुधोदं शुच्यता नानवज्रस्वभावात्मकोह॥
धुतयवाके॥ ॐ भगवन् श्री अमुकसकजविद्याराजं न
मोमुतेकरतुमिध्नामितेनाथं मद्रं लं करुनात्मकं सि
या नो मनुकं पार्थश्रु कमाकं पूजनायकः तमे भगवत्स्य

भगवन् प्रसारदक कर्तुमर्हसिसमंवाहर्तुमान्द्र
धाथजगच्चक्रियार्थदाः बोधिसत्ताश्च ज्ञानान्याम
त्रदेवतादेवतालोकपालासंबोधिसामनासाधनाभे
र्त्तयेकेचित् अनुकंपामुपादाय सतसिष्यं ॐ आवज
धुपंप्रतिदत्त्वाह॥ धनलिपाशिनसयाचसलाचिकि
धनधुस्फुलिनकावः पात्रसजीनगुधभतिहोत्वं
विजाहारोत्वं सोधनयायवाके॥ ॐ हहोहोः अरवं
त्वाह॥ हकालेहरते भरनं हो काले गंधनासनं हों का
ले विजहत्ता च अमृता काले अमृते अमृत रूपं पत्पत्
निसंतनाकिगकयाहजसगवोनेवाके॥ ॐ अथ मे

सकलं जन्मसंसारं लंघयितुं च मे समयः सर्वदेवानां भवे
त्राहं नमः शाय अशो मे दिवसो ह स सर्वं बुधनि मंत्रया
मि॥ **चामेदलायि ले॥** ॐ वज्रभुमे इंसुते ये इंसर्वतथा
सुवर्गा ज न धारि स्वाहा॥ **सि न ति के वा के॥** इदं ते प
त्रं गंधं सह आनोजितं जथा दर्शयिष्यामि का सौर चं
न दनं कुं कुं ॐ भावज्जसिंधु तिल वषभु वचे स्वाहा॥
जज का तय वा के॥ ॐ वज्रवक्त्रां कारयुजामेष्टो समु
द्रफलनं समयजशो पवित्रं वज्रवाससे स्वाहा॥ **सा**
दाय वा के॥ ॐ सर्मथस्वस्ति वक्रतां बुधस्वस्ति देवा
सहस्रकास्ति सर्वा न भुतानि सर्वकालं दि संतु वः व

द्रुण्या नु भावेन देवतानमस्ते न चः यो यो अर्थसम
भिप्रेत सर्वथो दि स मा धि ताः स्वस्ति वो धो पदे भवेतु
स्वस्ति वो धि व नु प्यदेः स्वस्ति वो वज्रता मार्गे स्वस्ति
प्रत्या गतेषु च स्वस्ति रात्रौ स्वस्ति दीया स्वस्ति मध्य दि
ने स्थोत सर्वत्र स्वस्ति वो पदे भवेतु मार्ग चैषा पापमा
गम सर्वसत्ताः सर्वप्रानाः सर्वभुताश्च के वलाः सर्ववै
मुक्ति न संतु निरात्मया॥ सर्वभद्रा निपत्य तु माघ के
वा पापमागमः जानि ह भुतानि सर्वा गतानि स्थी ता
नि भुमां यथ मां तरिक्ष कुर्वतु मे त्रिसततं प्रजा सुदि
वाचरात्रौ च चरंतु धर्म॥ **हो ना स मा य दाय वा के॥** ॐ
नैवय सक संजुक्तं वा ज्यभाजं समया चक्रं वज्रं नै विद्य

स्वाहा ॥ **धालायाय वाके** ॥ ॐ नमो भगते विरे विरेभ
राय इंफट् ॥ महाकला मिसनि भाय इंफट् ॥ जताम
कुटोकटभैरवाय इंफट् ॥ इष्टा कला लो गुभीषनमु
वाय इंफट् ॥ सहस्रभुज परसुपासत्रि शुररवदोग
धारि निय इंफट् ॥ वायुजि नांवरधारि निय इंफट् ॥
महाधुमांभकाराय इंफट् ॥ **सतविष** ॥ नेत्राभिरात्मा
महुरत्नकोषानराधियार विजपादयये ज्ञानप्रतिपा
हतमोलमला जलदिपमालारचयं तितत्रवज्रदिपंपु
तिदस्वाहा ॥ **पुष्पपासयाय वाके** ॥ असुनिय स्वाहा ॥
त्यादि ॥ **धनेलियकोपहा** ॥ पुजामंत्रतर्पण ॥ **धनेलित**
यजययाय ॥ जेधर्मा हेनुप्रभावाहेनु तेयां क्योनिरो

धस्वेवादिमहाश्रवने ॥ **धने** ॥ **वसु**
नाय पुजायाय ॥ अकालमुख सर्वध ॥ **नीमायनुपे**
तां ॐ आः इंफट् स्वाहा ॥ **आदि पुजायाय** ॥ ॐ मजुश्रायं
कुमालभुताय कोधिसत्ताय महासत्ताय महाकाहने
कायतो इरदक्षनासे अबदोषयामि ॥ **सताशरत्नादि**
धुतिसगंमतथापि पुजाया विधि जुल ॥ ॥ **धनेलिते**
वपुजायाय ॥ **हापां भावनात्वांतय** ॥ भगवान् श्री ३३
मुकदेवतापुजानि मीत्यार्थस्वभावमुधात्मादि ॥ **धने**
लिधुंतयवाके उथ्य ॥ निमंत्रनाउथ्य ॥ **धनेलिते सन**
यातके हापांः लवतयः साइइः येतकलीः वायदेदा
तयवाके ॥ ॐ जतमंगलं सकलसत्त्वहर्दस्थितस्य वि

भात्मकस्य ॥ कुलाधिपत्यनित्यकसत्तुधन
 कस्य महासुखात्मकस्य तत्तुदलं भवतु ते पराभाभि
 वेक ॥ वूँ औं जिं वूँ ॥ तं पतत्यं हृत्कनकेन वाके ॥ प्र
 ति वीं वसमाधर्मा आक्षुधाहेन विराभग्राहानभिगा
 प्याथ हेतुकर्मसमुत्पवं ॥ तनान काय ॥ औं सर्वतथा
 गत अभिवेकसमश्चेद् ॥ धामदलधिते उथं ॥ सिद्धं
 तं त्रिके उथं ॥ ज जमका तय उथं ॥ देवताया सुतमंत्रन
 तान ज पयास्यं दाय उथं ॥ हो जाः समयः धाताः मतवि
 यवाके उथं ॥ पुष्पं न्यासया ॥ वैलोचनाय त्यादिः पं
 चपहारपुजा तात्पायं ठा वादन लुतिः मंत्रद्वयं ॥ सुहमे
 वनं ताय ज पयास्यं पुजाया ये ॥ जेधर्मा ॥ अकालमु

यत्यादि ॥ दक्षना कितये ॥ सत ॥ तित्यादि
 इति देवपुजा ॥ ॥ धनं लिखाकपुजा ॥ धोपणीथाय
 लाहा ॥ दंडोपदंडाय लाहा ॥ मेलाय कवमेलाय क पमेला
 पकः समसा नपसमसानाय लाहा ॥ पुं ॥ ॥ मंद
 तयिते ॥ वज्रपुष्पोत्थाहान्यादि ॥ वनुरत्न्यादि ॥ धमंस
 कोसिलव वीनेः सताक्षर ॥ समापनमेदलविसर्जन
 सगं दाय ॥ मरुति दाय ॥ धमने सिद्धल एतिय ॥ वा
 देदादाय ॥ अभिवेककाय ॥ समया चत्र ॥ पंचपहा
 रपुजालात्पायं ठा वादन लु ॥ मंत्रतर्पण ॥ तताक्षर
 त्यादि ॥ कुतो व त्यादि ॥ ॥ इतिलय सिक्काजोले
 विधिसमाफ ॥ ॥ धमपु वीयागुः जिः मजी ॥ समायायमा

